

धर्मरत्न बजाचंद सुरत श्री महाबिहार

DH333



काचछ

ॐ

[illegible]

महासुखेन ॥ समकरुण्यवचनामवाधिसुखेन महासुखेन ॥ महाह्लासप्रदवचनामवाधिसुखेन महासुखेन ॥  
सर्वधीवप्रदविक्रिमाववाधिसुखेन महासुखेन ॥ सर्वशून्यवचनामवाधिसुखेन महासुखेन ॥ शेषकामन  
नचवाधिसुखेन महासुखेन ॥ श्रुतलोकिकशून्यवचनामवाधिसुखेन महासुखेन ॥ वज्रपाणिनाचवाधिसुखे  
नमहासुखेन ॥ सागप्रमकिनाचवाधिसुखेन महासुखेन ॥ धर्मधननचवाधिसुखेन महासुखेन ॥ पृ  
थिवीवप्रदाचननचवाधिसुखेन महासुखेन ॥ आस्वास्त्यनचवाधिसुखेन महासुखेन ॥ भेदीयनच



काव्य

गी

वाधिसुखनमहासुखन॥ अवम्यमुखेचगीनिवाधिसुखकोय॥ सुन्नयदिना॥ अन्यचस्रिगर्देवपूजनिक्काया॥  
सुन्नियकिनामह॥ यत्रनात्रायद॥ वयूत्रयुर्वेगमा॥ सुक्रादेवानामिश्रवक्राचसहायदिश्रयादिन्यायुवयूक्ष  
दय॥ उहिर्देवपूज॥ सुन्नियकिनाकस्मिन्पर्वदिश्रुनेकानिचनानागत्राजगमसह॥ सुन्नियकिने॥ कथथाम्य  
लालनचनोगत्राह॥ लयधनचनानागत्राह॥ किमिगिधनचनानागत्राह॥ गवाम्यकिनचनानागत्राह॥ गन  
गीधनचनानागत्राह॥ स्वरधनचनानागत्राह॥ वक्रदकनचनानागत्राह॥ कक्रकनचनानागत्राह॥ गमधनच

नागत्राह॥ मगगीधनचनानागत्राह॥ नक्षपनक्षनचनानागत्राह॥ व  
नागत्राह॥ सागत्रनचनानागत्राह॥ चवंपमूखेचभकेनागत्रागं  
धर्वगमसह॥ सुन्नियकिने॥ कथथाम्य  
कुनचनानागत्राह॥ सहाम्यकिनचनानागत्राह॥ गत्रीप्रयहो  
धनचनानागत्राह॥ मूलकायहविधनचनानागत्राह॥ कूमात्रदर्शनचनानागत्राह॥



काव्य

शी

धर्मपिय दानं धर्मं वाह ॥ न वं प्रमृष्टे प्रभुके श्रग भव प्रज गम स  
केशकिन्न प्रजासु स ह मे ॥ सन्नियकि के सुसिन्न वय विदि ॥ न य  
किनाच किन्न व वाह ॥ स्वाकि मूर्धन च किन्न प्र वाह ॥ प्रह विन्न न च  
य व्याव कीर्ण न च किन्न प्र वाह ॥ मनि नाच किन्न प्र वाह ॥ प्रल वी दे  
प्र वाह ॥ सुर्ण धन न च किन्न प्र वाह ॥ ग म मूर्धन च किन्न प्र वाह ॥

ह मे सन्नियकि के ॥ मूर्धन केशा य प्र गम स ह मे ॥ सन्नियकि के ॥ न य था वि ला कु मा ना मा य प्र सा ॥ स्यू हा ना मा य प्र  
सा ॥ सुवर्ध भव प्र ना मा य प्र सा ॥ विरु विना ना मा य प्र सा ॥ मूर्धन विन्द ना मा य प्र सा ॥ यत्रि ॥ श्रि क का रा  
ना मा य प्र सा ॥ मक्षि प्र हा ना मा य प्र सा ॥ नू ज ना मा य प्र सा ॥ द वा हि मूर्ख ना मा य प्र सा ॥ मूर्धन विन्द ना मा  
य प्र सा ॥ य ३ रू र्ण हि मूर्ख ना मा य प्र सा ॥ प्र कि क ना ना मा य प्र सा ॥ कां व न मा ला ना मा य प्र सा ॥ नी ला ल्य ला  
ना मा य प्र सा ॥ धर्मा हि मूर्ख ना मा य प्र सा ॥ सु क ज ना मा य प्र सा ॥ क ह ना ना मा य प्र सा ॥ स्यू हा ना मा य प्र



का २५

५१

सा ॥ कयूनानामायत्रसा ॥ दानदनामायत्रसा ॥ गीनामायत्रसा ॥ अवस्यमुखवनेकेयसा ॥ गनसहस्रे ४ सन्नि  
यकिनेमूनकानिचनगकन्यागकानिसन्निधकिरानि ॥ कथथाविहृषधध्रीनामनागकन्या ॥ सुचिचिदनामनाग  
कन्या ॥ प्रिऊटानामनागकन्या ॥ स्वाकिमूर्खानामनागकन्या ॥ ऊयश्रियानामनागकन्या ॥ विऊयश्रियानामनाग  
कन्या ॥ विद्युर्लोचनानामनागकन्या ॥ विद्युत्पुलानामनागकन्या ॥ स्वाकिगिरीनानामनागकन्या ॥ गनय  
प्रिवात्रानामनागकन्या ॥ महोषधिनामनागकन्या ॥ विन्दुनामनागकन्या ॥ एकगीर्वाणामनागकन्या ॥ गनवा

४

कनामनागकन्या ॥ यमनीनामनागकन्या ॥ मूनाकयूनामनागकन्या ॥ सुवाकनामनागकन्या ॥ याधुवम  
द्यानामनागकन्या ॥ प्रथमहिपूराणामनागकन्या ॥ व्यागानुराणानामनागकन्या ॥ अहिन्नय  
प्रिवात्रानामनागकन्या ॥ यूलिंदानामनागकन्या ॥ सागत्रककिनामकन्या ॥ ॥ कयमूर्खाना  
मनागकन्या ॥ ॥ धर्मविभनामनागकन्या ॥ ॥ सुखकयानामनागकन्या ॥ ॥



कात्रधु

अ

धर्मरत्न बज्राचार्य सुरत श्री महाबिहार

DH 333

अ